पाठ - 13

FR77YE

# रानी दुर्गावती

**गढ़मण्डल के जंगलों में उस समय एक शेर का आतंक छाया हुआ था । शेर कई जानवरों को मार चुका था। रानी कुछ सैनिकों को लेकर शेर को मारने निकल पड़ीं। रास्ते में उन्होंने सैनिकों से कहा, "शेर को मैं ही मारुँगी" । शेर को ढूँढ़ने में सुबह से शाम हो गई। अंत में एक झाड़ी में शेर दिखाई दिया, रानी ने एक ही वार में शेर को मार दिया। सैनिक रानी के अचूक निशाने को देखकर आश्चर्य चकित रह गए।**

यह वीर महिला गोंडवाना के राजा दलपतिशाह की पत्नी रानी दुर्गावती थीं।

दुर्गावती का जन्म सन् 1530 के लगभग महोबा में हुआ था। दुर्गावती के पिता महोबा के राजा थे। दुर्गावती को बचपन से ही वीरतापूर्ण एवं साहस भरी कहानियाँ सुनना व पढ़ना अच्छा लगता था। पढ़ाई के साथ-साथ दुर्गावती ने घोड़े पर चढ़ना, तीर-तलवार चलाना, अच्छी तरह सीख लिया था। पिता के साथ वे शासन का कार्य भी देखती थीं।

विवाह योग्य अवस्था प्राप्त करने पर उनके पिता ने राजपूताने के राजकुमारों में से योग्य वर की तलाश की, परंतु दुर्गावती गोंडवाना के राजा दलपति शाह की वीरता पर मुग्ध थीं। दुर्गावती के पिता अपनी पुत्री का विवाह दलपति शाह से नहीं करना चाहते थे। अंत में दलपति शाह और महोबा के राजा का युद्ध हुआ जिसमें दलपति शाह विजयी हुए। इस प्रकार दुर्गावती और दलपति शाह का विवाह हुआ।

दुर्गावती अपने पति के साथ गढ़मण्डल में सुखपूर्वक रहने लगीं। इसी बीच दुर्गावती के पिता की मृत्यु हो गई और महोबा तथा कालिंजर पर मुग़ल सम्राट अकबर का अधिकार हो गया ।

विवाह के एक वर्ष पश्चात् दुर्गावती के एक पुत्र हुआ जिसका नाम वीर नारायण रखा गया। जिस समय वीर नारायण केवल तीन वर्ष का था दुर्गावती के पति दलपति शाह की मृत्यु हो गई। दुर्गावती के ऊपर तो मानों दुःखों का पहाड़ ही टूट पड़ा। परंतु उन्होंने बड़े धैर्य और साहस के साथ इस दुःख को सहन किया।

दलपति शाह की मृत्यु के बाद उनका पुत्र वीर नारायण गद्दी पर बैठा। रानी दुर्गावती उसकी संरक्षिका बनीं और राज-काज स्वयं देखने लगीं। वे सदैव प्रजा के दुःख-सुख का ध्यान रखती थीं। चतुर एवं बुद्धिमान मंत्री आधार सिंह की सलाह और सहायता से दुर्गावती ने अपने राज्य की सीमा बढ़ा ली। राज्य के साथ-साथ उन्होंने सुसज्जित स्थायी सेना भी बनाई और अपनी वीरता, उदारता, चतुराई से राजनैतिक एकता स्थापित की। गोंडवाना राज्य शक्तिशाली तथा सम्पन्न राज्यों में गिना जाने लगा। इससे दुर्गावती की ख्याति फैल गई।

दुर्गावती की योग्यता एवं वीरता की प्रशंसा अकबर ने सुनी। उसके दरबारियों ने उसे गोंडवाना को अपने अधीन कर लेने की सलाह दी। उदार हृदय अकबर ने ऐसा करना उचित नहीं समझा, परंतु अधिकारियों के बार-बार परामर्श देने पर अकबर तैयार हो गए। उन्होंने आसफ खाँ नामक सरदार को गोंडवाना के गढ़मण्डल पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी।

आसफ खाँ ने समझा कि दुर्गावती महिला हैं, अकबर के प्रताप से भयभीत होकर आत्म समर्पण कर देंगी परंतु रानी दुर्गावती को अपनी योग्यता, साधन और सैन्य शक्ति पर इतना विश्वास था कि अकबर की सेना से भी भय नहीं था। रानी दुर्गावती के मंत्री ने आसफ खाँ की सेना और सज्जा को देखकर युद्ध न करने की सलाह दी। परंतु रानी ने कहा, ‘‘कलंकित जीवन जीने की अपेक्षा सम्मानपूर्वक मर जाना अच्छा है। आसफ खाँ जैसे

साधारण सूबेदार के सामने झुकना लज्जा की बात है। रानी सैनिक के वेश में घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ीं। रानी को सैनिक वेश में देखकर आसफ खाँ के होश उड़ गए। रणक्षेत्र में रानी और उनके सैनिक उत्साहित होकर शत्रुओं पर टूट पड़े। देखते ही देखते शत्रुओं की सेना मैदान छोड़कर भाग निकली।  आसफ खाँ बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाने में सफल हुआ।

आसफ खाँ की बुरी तरह हार सुनकर अकबर बहुत लज्जित हुए। डेढ़ वर्ष बाद उन्होंने पुनः आसफ खाँ को गढ़मण्डल पर आक्रमण करने भेजा । रानी तथा आसफ खाँ की सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ। तोपों का वार होने पर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी। रानी हाथी पर सवार होकर सेना का संचालन कर रही थीं। उन्होंने मुग़ल तोपचियों का सिर काट डाला। यह देखकर आसफ खाँ की सेना फिर भाग खड़ी हुई। दो बार हार कर आसफ खाँ लज्जा और ग्लानि से भर गया ।

रानी दुर्गावती अपनी राजधानी में विजयोत्सव मना रही थीं। उसी समय गढ़मण्डल के एक सरदार ने रानी को धोखा दे दिया। उसने गढ़मण्डल का सारा भेद आसफ खाँ को बता दिया। आसफ खाँ ने अपनी हार का बदला लेने के लिए तीसरी बार गढ़मण्डल पर आक्रमण किया। रानी ने अपने पुत्र के नेतृत्व में सेना भेजकर स्वयं एक टुकड़ी का नेतृत्व सँभाला। दुश्मनों के छक्के छूटने लगे। उसी बीच रानी ने देखा कि उनका पन्द्रह वर्षीय पुत्र घायल होकर घोड़े से गिर गया है। रानी विचलित न हुईं। उनकी सेना के कुछ वीरों ने वीर नारायण को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया और रानी से प्रार्थना की कि वे अपने पुत्र का अंतिम दर्शन कर लें। रानी ने उत्तर दिया- “यह समय पुत्र से मिलने का नहीं है। मुझे खुशी है कि मेरे वीर पुत्र ने युद्ध भूमि में वीरगति पायी है। अतः मंै उससे देवलोक में ही मिलूँगी।”

वीर पुत्र की स्थिति देखकर रानी दुगुने पराक्रम से तलवार चलाने लगीं। दुश्मनों के सिर जमीन पर गिरने लगे। तभी दुश्मनों का एक बाण रानी की आँख में जा लगा, दूसरा तीर रानी की गर्दन में लगा। रानी समझ गईं कि अब मृत्यु निश्चित है। यह सोचकर कि जीते जी दुश्मनों की पकड़ में न आऊँ उन्होंने अपनी ही तलवार अपनी छाती में भांेक ली और अपने प्राणों की बलि दे दी ।

रानी दुर्गावती ने लगभग 16 वर्षों तक संरक्षिका के रूप में शासन किया। भारत के इतिहास में रानी दुर्गावती और चाँदबीबी ही ऐसी वीर महिलाएँ थीं जिन्होंने अकबर की शक्तिशाली सेना का सामना किया तथा मुग़लों के राज्य विस्तार को रोका। अकबर ने अपने

शासन काल में बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ीं किंतु गढ़मण्डल के युद्ध ने मुग़ल सम्राट के दाँत खट्टे कर दिए।

रानी दुर्गावती में अनेक गुण थे। वीर और साहसी होने के साथ ही वे त्याग और ममता की मूर्ति थीं। राजघराने में रहते हुए भी उन्होंने बहुत सादा जीवन व्यतीत किया। राज्य के कार्य देखने के बाद वे अपना समय पूजा-पाठ और धार्मिक कार्यों में व्यतीत करती थीं।

भारतीय नारी की वीरता तथा बलिदान की यह घटना सदैव अमर रहेगी।

## अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

   (क) दुर्गावती को बचपन में कैसी कहानियाँ सुनने का शौक था ?

   (ख) रानी दुर्गावती के पुत्र का क्या नाम था ?

   (ग) आसफ खाँ ने गढ़मण्डल पर आक्रमण क्यों किया ?

   (घ) पुत्र के अंतिम दर्शन के लिए रानी ने क्या उत्तर दिया ?

2. सही विकल्प चुनिए-

   (क) रानी दुर्गावती दलपति शाह से विवाह करना चाहती थीं क्योंकि-

      1. वे बड़े देश के राजा थे।

      2. वे बड़े वीर थे।

      3. वे बड़े सुंदर थे।

   (ख) युद्ध भूमि में रानी ने तलवार अपनी छाती में भोंक ली क्योंकि-

      1. उनके पुत्र की मृत्यु हो गई थी।

      2. वह जीते जी शत्रु के हाथ में पड़ना नहीं चाहती थीं ।

3. वह युद्ध नहीं करना चाहती थीं।

**योग्यता विस्तार-**

रानी दुर्गावती की तरह अन्य वीर महिलाओं के विषय में अध्ययन कीजिए।